TEST CODE: 21020

FIAS – 2019 – 20A

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

ForumIAS

ACADEMY

GENERAL STUDIES

Name Of Candidate	RHEECHA RATNAM		
Email Id.	[redacted]	Roll No.	1910034941
Mobile No.	[redacted]	Date:	20/08/2019

Time Allowed: One and Half Hours

Maximum Marks: 125

INDEX TABLE		
Q. No.	Max. Marks	Marks Obtained
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
Total Marks:		

INSTRUCTION

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Email, Roll No., Mobile).
2. There are TEN questions printed in ENGLISH.
3. All questions are compulsory.
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
5. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum Answer Booklet must be clearly Struck off.

Remarks:	**Start Time|**	**End Time|**
	Mode Of Examination :	**Online** ☐ **Offline** ☐
	ECN CODE:	**Evaluation Date:**

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

Parameters	Excellent	Very Good	Good	Average	Poor	Very Poor
Language						
Structure						
Presentation						
Innovation						
Handwriting						
Content						
Attempt						

ADDITIONAL COMMENTS

2018 © ForumIAS | All rights reserved

Scanned by CamScanner

1. Fundamental Rights and Directive Principles of State Policy collectively form the conscience of the Constitution, they are outwardly distinguished from each other. Comment.

(10 Marks, 150 Words)

संविधान के अनु॰ 12-35 के अंतर्गत मौलिक अधिकार व अनु॰ 36-51 के अंतर्गत नीति निदेशक तत्वों का उपबंध है।

* मौलिक अधिकार व नीति निदेशक तत्व : संविधान की अंतरात्मा

1.) दोनों मिलकर संविधान के दार्शनिक भाग का निर्माण करते हैं।

2.) दोनों का उद्देश्य लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है।

• इसके बावजूद इन दोनों में पर्याप्त अंतर विद्यमान हैं :-

मौलिक अधिकार	नीति निदेशक तत्व
1.) उद्देश्य : राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना। eg. अनु॰ 19 — वाक् व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।	1.) उद्देश्य :- सामाजिक व आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना। eg :- अनु. 39क द्वारा निःशुल्क विधिक सहायता
2.) उद्ग्रहण :- अमेरिकी संविधान।	2.) उद्ग्रहण :- आयरिश संविधान

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

मौलिक अधिकार	नीति निदेशक तत्व
3.) व्यक्तिगत प्रकृति के।	3.) सामुदायिक प्रकृति के।
4.) राज्य की शक्ति पर निर्बंधन लगाते हैं। उदाहरण :- अनु. 32 के अंतर्गत संवैधानिक उपचारों की गारंटी।	4.) राज्य को अतिरिक्त शक्तियाँ प्रदान करते हैं। उ. अनु. 44 के अंतर्गत 'समान सिविल संहिता' निर्माण।
5.) न्यायालय में वादयोग्य हैं।	5) न्यायालय में वादयोग्य नहीं हैं।

इस प्रकार के विशेषज्ञ, मौलिक अधिकारों व नीति निदेशक तत्वों में अंतर के बावजूद दोनों के समन्वय पर भारतीय संविधान की आधारशिला मानते हैं।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

2. The judiciary alone cannot take forward the mission of deepening democracy and protecting social freedoms. Comment.

(10 Marks, 150 Words)

उच्चतम न्यायालय द्वारा हाल में दिए गए कुछ निर्णयों को लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण व सामाजिक सुधारों से जोड़ा गया है। (शबरीमाला वाद)

* लोकतंत्र सुदृढ़ीकरण : उच्चतम न्यायालय निर्णय

1.) निर्वाचन सुधार – उदाहरण :- लिली थॉमस वाद में अपराधी सांसदों / विधायकों के पद पर बने रहने की अनुमति समाप्त। [RPA अधिनियम धारा 8(4)]

2.) जनहित याचिकाएँ – न्यायपालिका का लोकतांत्रिकरण। उदाहरण :- यूनियन कार्बाइड मामले में पीड़ितों को क्षतिपूर्ति।

* सामाजिक स्वतंत्रता से जुड़े उच्चतम न्यायालय निर्णय

1.) व्यक्तिवाद को बढ़ावा :- उदाहरण :- पुट्टास्वामी वाद में 'निजता का अधिकार' अनु. 21 से संबद्ध बताना।

2.) अल्पसंख्यकों / चयन के अधिकार को मान्यता उदाहरण :- नवतेज सिंह जौहर वाद में IPC की धारा 377 के अंतर्गत समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर निकालना।

Scanned by CamScanner

परंतु इसके बावजूद उच्चतम न्यायालय के कदम (SC) अपर्याप्त हैं :-

1.) धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप का विरोध उदाहरण :- धर्म से जुड़े सुधार नीचे से होने चाहिए (धार्मिक हेतु सबरीमाला, शबरीमाला वाद)

2.) न्यायिक अतिसक्रियता - SC द्वारा कार्यपालिका व विधायिका के क्षेत्र में प्रवेश। उदाहरण :- अरुण गोपाल वाद में पटाखे जलाने पर समय सीमा।

3.) सामाजिक भेदभाव व पूर्वाग्रहों पर SC निर्णय का प्रभाव नहीं दिखता। उदाहरण :- MINGLE रिपोर्ट प्रत्येक 5 में से 1 LGBT भेदभाव से पीड़ित।

4.) लोकतांत्रिक सुधार नाकाफी -
- ADR रिपोर्ट के अनुसार दागी सांसदों की संख्या में वृद्धि (17वी LS

ऐसे में सुधारों के लिए कार्यपालिका, विधायिका व समाज की न्यायपालिका के साथ भागीदारिता आवश्यक है।

Feedback(For OFFICE use only)

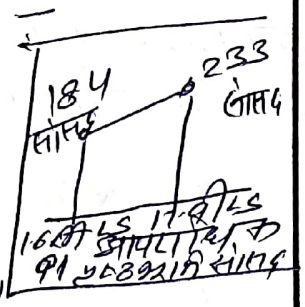

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

3. What is the doctrine 'basic structure' of Indian constitution? Does the doctrine undermine the parliamentary sovereignty? Critically examine.

(10 Marks, 150 Words)

केशवानंद वाद में उच्चतम न्यायालय(SC) ने 'मौलिक ढाँचे' (संविधान के) डॉक्ट्रिन का प्रतिपादन किया।

* संविधान का मूल ढाँचा डाक्ट्रिन : विशेषताएँ

1.) संसद के अनु. 368 के अंतर्गत संविधान संशोधन(CA) शक्ति पर सीमा। उदाहरण :- संविधान के मूल ढाँचे उपबंध का संशोधन नहीं' ('धर्मनिरपेक्षता' (बोम्मई वाद)

2.) किसी CA अधिनियम की संवैधानिकता पर अंतिम निर्णय, SC द्वारा। उदाहरण :- 103 CA अधिनियम, SC में संवैधानिकता हेतु याचिका दायर।

* मूल ढाँचा डाक्ट्रिन की आलोचना : संसदीय संप्रभुता में कमी

आलोचकों के अनुसार :-
1.) मूल ढाँचे का सिद्धांत संविधान में वर्णित नहीं।
2.) संसद की संविधान संशोधन शक्ति (अनु. 368) को प्रतिबंधित करता है।
3.) गैर-निर्वाचितों (न्यायाधीशों) द्वारा प्रतिपादित डाक्ट्रिन।
4.) प्रजाता के प्रतिनिधियों के अधिकारों पर गैर निर्वाचितों की निरंकुशता दर्शाता है।

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

इसके बावजूद इस आवेदन का महत्व है, क्योंकि —

(i) संविधान के मौलिक स्वरूप में परिवर्तन को रोकता है। उदाहरण :- न्यायिक समीक्षा की शक्ति (मिनर्वा मिल्स)

(ii) सांसदों पर शक्तियुक्त निर्बन्धन का कार्य करता है।

(iii) भारतीय संविधान में संसदीय संप्रभुता व न्यायिक सर्वोच्चता के मध्य समन्वय स्थापित किया गया है।

SC ने मिनर्वा मिल्स वाद, 99वें CA अधिनियम में बार-बार मौलिक ढांचे का प्रयोग, अधिनियमों की संवैधानिकता जांचने हेतु किया है।

यह परिपक्व होते लोकतंत्र को दर्शाता है, जैसा संविधानविदों का मत है।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com

Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

4. Odisha's proposal for creation of legislative council calls for a national policy on the utility of a second chamber in States. Discuss.

(10 Marks, 150 Words)

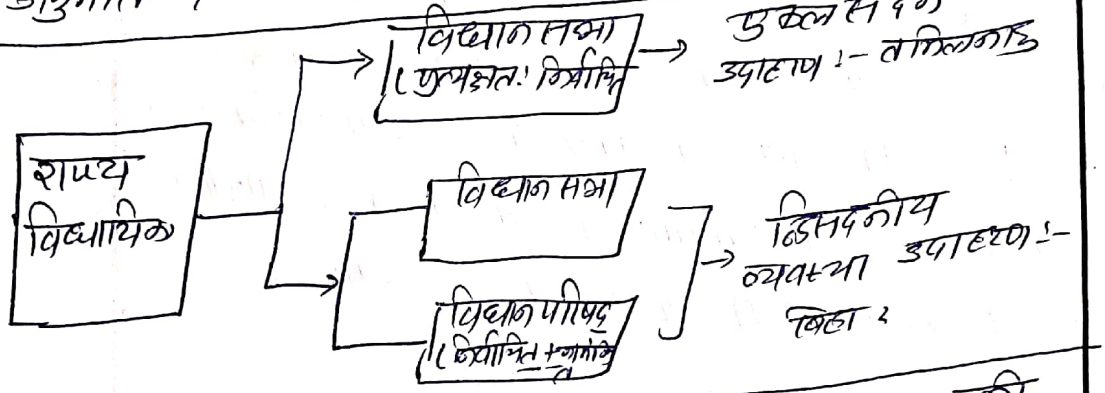

भारतीय संविधान में राज्यों को एकसदनीय अथवा द्विसदनीय विधायिका अपनाने की अनुमति / व्यवस्था उपबंधित है।

• हाल ही में उड़ीसा द्वारा विधान परिषद गठन की मांग, ने इस मुद्दे को पुनः उभारा है :-

राज्य विधानपरिषद : उपयोगिता

पक्ष

1.) यह निर्वाचितों की निरंकुशता पर नियंत्रण रखेगा।

2.) बुद्धिजीवियों को सदस्यता, जो चुनावी राजनीति नहीं जीत सकते।
उदाहरण :- कला, विज्ञान के व्यक्तियों का नामांकन)

3.) यह उपबंध अनिवार्य नहीं, बल्कि स्वैच्छिक है।

विपक्ष

1.) विधेयक को विलंबित करने का सदन।

2.) हारे हुए नेताओं व समझौतावादी पत्रकारों का सदन बन गया है।

3.) सिर्फ 7 राज्यों में विधान परिषद, इस उपबंध की कमजोर स्थिति दर्शाते हैं।

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

	विपक्ष
4.) राज्यसभा के समान शक्तिशाली नहीं है। - अधिकतम 4 महीने तक विधेयक रोक सकता है।	4.) विधेयक को रोकने में सरकार के गवर्नेंस पर प्रभाव।

- इस संबंध में विधानपरिषदों की उपयोगिता पर राष्ट्रीय नीति बनाने का विचार, इसके पक्ष-विपक्ष में भी विभिन्न मत दिए जा सकते हैं। उदाहरण :- विधानपरिषदों का गठन, आश्रित राज्य विधानसभा पर निर्भर इत्यादि।

* आगे का मार्ग

1.) विधानपरिषदों में स्थानीय निकायों के सदस्यों को प्रतिनिधित्व देना।

2.) इसे और अधिक प्रतिनिधि स्वरूप देना उदाहरण :- महिलाओं के लिए आरक्षण।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

5. USA and India are touted as the world's oldest and largest democracies. Examine the basic tenets on which the two political systems are based.

(10 Marks, 150 Words)

अमेरिकी लोकतंत्र की स्थापना, 1784 में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम पश्चात्, वहीं भारतीय लोकतंत्र 1947 में गठित हुआ।

- अपने दो दशक से पुराने लोकतंत्र के कारण अमेरिका सबसे प्राचीन व अपनी जनसंख्या के कारण भारत सर्वाधिक विशाल लोकतंत्र है।

★ अमेरीकी व भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली: बुनियादी सिद्धांत समानताएं

1.) दोनों द्वारा संघीय व्यवस्था अपनाना।
उदाहरण — द्वितीय सरकार, केंद्र - राज्य

2.) स्वतंत्र न्यायपालिका - संघ व इकाईयों के मध्य विवाद समाधान हेतु।

3.) सार्वभौम व्यस्क मताधिकार अपनाना।

4.) नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान।
अमेरीका — बिल ऑफ राइट्स
भारत — अनु० 12-35

अनेक बावजूद इन दोनों लोकतंत्रों में पर्याप्त अंतर विद्यमान है :-

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

अमेरीका	भारत
1.) शक्तियों का पृथक्करण सिद्धांत - प्रकृति से स्वतंत्र। कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका	1.) शक्तियों का पृथक्करण पूर्णतः नहीं।
2.) राष्ट्रपति प्रणाली। ↳ राष्ट्रपति राष्ट्र व सरकार का प्रमुख। ↳ कार्यपालिका के सदस्यों की नियुक्ति उनके द्वारा।	2.) संसदीय प्रणाली :- • कार्यपालिका, विधायिका के प्रति उत्तरदायी। • प्रधानमंत्री सरकार व राष्ट्रपति देश का प्रमुख।
3.) राज्यों का अलग संविधान।	3.) राज्यों के लिए भी एकल संविधान (केंद्र + राज्य)
4.) द्विपार्टी प्रणाली	4.) बहुपार्टी प्रणाली।

भारत जहाँ एकात्मकता के साथ संघीय देश, वहीं अमेरीका विश्व का प्राचीनतम संघीय देश है।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

6. "The veil of social morality cannot violate the rights of even one single individual."In the light of this statement analyse Supreme Court judgement on Section 377.

(15 Marks, 250 Words)

उच्चतम न्यायालय(SC) ने नवतेज सिंह जौहर वाद में भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 377 के कुछ उपबंधों को असंवैधानिक घोषित कर, समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया।

- उच्चतम न्यायालय ने उपरोक्त निर्णय में सामाजिक नैतिकता पर संवैधानिक नैतिकता को वरीयता दी व मौलिक अधिकारों को पुनः स्थापित किया।

* नवतेज सिंह जौहर वाद में SC निर्णय : निहितार्थ

1.) समावेशिता को बढ़ावा - उपरोक्त निर्णय LGBT समुदाय को समाज में हाशियाकरण से उठाकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास। (न्यूज़पेपर रिपोर्ट)

2.) व्यक्तिवाद को बढ़ावा - 'पुट्टास्वामी वाद' में उच्चतम न्यायालय ने निजता के अधिकार में, सैक्सुअल ओरियन्टेशन को सम्मिलित कहा था।

3) चयन का अधिकार - LGBT सदस्यों को अपने साथी के चयन का अधिकार, हादिया वाद में SC द्वारा दिए निर्णय से संबद्ध है।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

4.) 'अल्पसंख्यकों' को 'बहुसंख्यकवाद' से बचाना

• पूर्व में सुरेश कौशल वाद में समलैंगिकता को अपराध घोषित करने के पीछे LGBT सदस्यों के अल्पसंख्यक होने का तर्क था।

5.) बदलते सामाजिक मानदंडों के अनुरूप निर्णय

• LGBT समुदाय को दिए गए अधिकार, आधुनिक युगीन समाज से संबद्ध हैं।

6.) वैश्विक मानदंडों का अनुपालन - विश्व के अधिकांश देशों - अमेरिका इत्यादि में 'समलैंगिकता' को वैधानिकता दी गई।

इसके बावजूद नवतेज सिंह जौहर वाद के क्रियान्वयन में निम्नलिखित चुनौतियाँ उपस्थित हैं :-

1.) सामाजिक पूर्वाग्रह :- CSDS के सर्वे में 61% लोगों ने समलैंगिकता को सामाजिक रूप से अस्वीकार किया।

2.) सामाजिक भेदभाव :- LGBT समुदाय के सदस्यों द्वारा बड़े पैमाने पर भेदभाव का सामना। उदाहरण :- ट्विटर दुती चंद का मामला, परिवार द्वारा विरोध।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this A

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

3.) सामाजिक नैतिकता भी समाज की स्थिरता हेतु महत्वपूर्ण, इसलिए पूर्णतः खारिज नहीं किया जा सकता।

* आगे का मार्ग

- हाल ही में मद्रास हाई कोर्ट ने अरुण कुमार व श्रीजा वाद में ट्रांसजेंडर व्यक्ति के साथ विवाह को हिंदू विवाह अधिनियम के अंतर्गत वैधानिक कहा।
- केस में कहा जा सकता है कि क्रमिक रूप से ही सही परंतु LGBT समुदाय को अधिकार प्राप्त हो रहे हैं।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

35725_21020_1910034941 (2019-08-22 21:08:54)

7. Indian Union is a unitary state with subsidiary federal features rather than a federal state with subsidiary unitary features. Discuss various aspects of Indian federal scheme that showcases its unitary bias.

(15 Marks, 250 Words)

संविधान के अनु. 1 के अंतर्गत भारत को 'राज्यों का संघ' कहा गया है। हालांकि संविधान में फेडरल की जगह यूनियन शब्द प्रयुक्त।

* भारतीय संघ : एकात्म राज्य सहायक संघीय विशेषताएं युक्त

• कई संविधानविदों ने भारतीय संघवाद को एकात्मकता लिए की जगह एकात्म राज्य, संघीय विशेषताओं के साथ कहा है, जिसके पीछे प्रमुख तर्क हैं :-

(i) अनु. 2 व अनु. 3 - भारत को विनाशी राज्यों का अविनाशी संघ बनाते हैं।

• ~~[illegible]~~ - (भारतीय) केंद्र सरकार, बिना राज्यों की अनुमति के उनकी स्थिति बदल सकती है, उदाहरण :- जम्मू-कश्मीर को राज्य की जगह 'केंद्र-शासित प्रदेश' बनाना।

(ii) आपातकालीन प्रबंध (अनु. 352-360)

- केंद्र सरकार के पास इनके अंतर्गत राज्य सूची के विषय पर विधि निर्माण की शक्ति।
- अनु. 356 के अंतर्गत राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने संबंधी प्रबंध।

- राज्य विधानसभा की शक्तियाँ संसद में निहित।

Scanned by CamScanner

3.) करारोपण शक्तियाँ – केंद्र के पास वित्तीय स्रोत अधिक व उत्तरदायित्व कम, वहीं राज्यों के पास वित्तीय स्रोत कम पर उत्तरदायित्व अधिक।
उदाहरण :- ~~आयकर~~ (केंद्र ~~उत्पाद~~), केंद्र, विभिन्न उपकरों से हुई आय राज्य के साथ साझा नहीं करती।

4.) एकल संविधान :- केंद्र व राज्य हेतु।

5.) अखिल भारतीय सेवाएँ, केंद्र व राज्य दोनों के लिए।

6.) एकल संस्थाएँ – निर्वाचन आयोग, कैग द्वारा केंद्र व राज्य दोनों के लिए निर्वाचन / लेखापरीक्षा करना।

7.) राज्यपालों की नियुक्ति – केंद्र द्वारा राज्यपाल की नियुक्ति।

इसके अतिरिक्त

8.) एकल नागरिकता।

9.) राज्यसभा द्वारा विशेष बहुमत (अनु 249) से पारित ~~कि~~ प्रस्ताव द्वारा राज्य सूची के विषय पर विधि बनाने की शक्ति।

इन उपबंधों के बावजूद संविधान निर्माताओं ने भारत को संघीय व्यवस्था का स्वरूप दिया था –

1.) द्विसदनीय विधायिका → लोकसभा (लोकमत) / राज्यसभा (राज्यों का प्रतिनिधित्व)

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy
Scanned by CamScanner

2.) लिखित संविधान - संविधान के द्वारा केंद्र व राज्यों के मध्य शक्तियों का विभाजन।

3.) दोहरी सरकार - केंद्र अपने अधिकारक्षेत्र में स्वायत्त, राज्य केंद्र के अधीनस्थ नहीं।

4.) स्वतंत्र न्यायपालिका - जिसके द्वारा संघ व उसकी इकाईयों के मध्य हुए विवाद का समाधान।

5.) संविधान की सर्वोच्चता, जिससे केंद्र व राज्यों द्वारा निर्मित अधिनियम संविधान की सीमा में रहें।

ग्रेनविल ऑस्टिन भारतीय संघवाद को सहकारी संघवाद कहते हैं, जिसमें केंद्र व राज्य एक-दूसरे के साथ परस्पर सहयोग करते हैं।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

35725 21020 1910034941 (2019-08-22 21:08:54)

8. Idea of simultaneous elections is as old as modern Indian polity. However, this cycle got disturbed and since then frequent elections have become the norm. Discuss the major issues associated with frequent elections in India.

(15 Marks, 250 Words)

राष्ट्रपति ने अपने संसदीय अभिभाषण (2019) में 'एक साथ चुनावों' को कराने संबंधी विचार को वर्तमान समय की आवश्यकता कहा।

- भारत में प्रारंभ में केंद्र व राज्यों के लिए निर्वाचन एक साथ ही होते थे।
  लेकिन 1967 से यह चक्र टूट गया, जिसका कारण राज्य विधानसभा व संसद का अवधि पूर्व विघटन था, जिसके बाद लगभग हर वर्ष निर्वाचन होते रहे हैं।
  लगातार होते

निर्वाचन : मुद्दे

1) निर्वाचन प्रक्रिया में अत्यधिक राशि का व्यय
→ लगातार चुनावों के कारण, सार्वजनिक व्यय का एक बड़ा भाग इनमें लगता है।

2) राजनीतिक पार्टियां हमेशा इलेक्शन मोड में।
- फलस्वरूप केंद्र व राज्यों द्वारा लोकलुभावन कार्यक्रमों की घोषणा अत्यधिक।
  उदाहरण :- कृषि ऋण माफी की घोषणा कथित सरकारों द्वारा।

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

3.) नियमित प्रशासन प्रभावित :- आदर्श आचार संहिता के लागू होने के कारण, प्रशासन प्रभावित। उदाहरण :- विभिन्न सरकारी कार्यों की ~~क्रियान्वयन~~ क्रियान्वयन।

4.) गवर्नेंस पर प्रभाव - चुनावी वर्ष को देखते हुए सरकारें महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय लेने में देरी करती हैं।

5.) प्रशासनिक बोझ - निर्वाचन आयोग के ऊपर प्रति वर्ष निर्वाचन कराने का प्रशासनिक बोझ अत्यधिक।

6.) केंद्र- राज्य संबंधों पर प्रभाव - भिन्न राज्यों में चुनाव वह केंद्र से विशेष आर्थिक पैकेज, स्वायत्तता जैसी मांगें अधिक करते हैं।

इसके बावजूद बहुत से विशेषज्ञों ने एक साथ चुनाव आयोजित कराने के विचार का विरोध किया है :-

(i.) लगातार होते चुनावों के कारण, पार्टियां जनविरोधी कदम नहीं उठाती।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941 (2019-08-22 21:08:54)

(ii) 5 वर्षों के अंतराल पर हुए चुनावों के कारण, संभव है कार्यपालिका अधिक निरंकुश बन जाए।

(iii) एकसाथ निर्वाचन कराने हेतु संविधान के विभिन्न उपबंधों में संशोधन, संविधान के मूल ढाँचे का उल्लंघन करेगा।

आगे का मार्ग :-

1) नीति आयोग
- अपनी रिपोर्ट में एकसाथ निर्वाचन कराने पर बल दिया है।

2) विधि आयोग (170वी रिपोर्ट)
- एकसाथ चुनाव कराने की सिफारिश।

बार-बार होते चुनावों को रोकने हेतु एकसाथ चुनाव कराने के विचार को प्रधानमंत्री ने पुरजोर वकालत की है, इसका क्रियान्वयन भविष्य के गर्भ में है।

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

9. The existing dispute redressal mechanisms in India have become a luxury for the poor and time consuming. Analyse the effectiveness of Alternate Dispute Redressal mechanisms as a remedy with reference to the given statement.

(15 Marks, 250 Words)

भारतीय संविधान में विवाद समाधान हेतु न्याय-पालिका के गठन का उपबंध है।

(उदाहरण :- अनु॰124-145 उच्चतम न्यायालय)

इसके बावजूद वर्तमान में विवाद समाधान तंत्र न्याय देने में विफल साबित हो रहा है :-

(i) निर्धनों के लिए न्याय एक विलासिता की वस्तु

• एक NGO द्वारा प्रकाशित ('एक्सेस टू जस्टिस' रिपोर्ट के अनुसार, भारत में न्याय बेहद महंगा।

• इसी रिपोर्ट के अनुसार, सर्वे के उत्तरदाताओं में सिर्फ 5% ने निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त की थी।

(ii) विवाद समाधान तंत्र विलंबित -

• आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार भारत में 3.5 करोड़ मामले न्यायालय में लंबित पड़े हैं।

ऐसे में वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र की आवश्यकता पर, उच्चतम न्यायालय ने भी बल दिया है।

वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र

• यह न्यायपालिका से इतर विवाद समाधान की प्रणाली है।

Scanned by CamScanner

• संविधान द्वारा निर्मित विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत इनका गठन :-

1.) नालसा अधिनियम – इसके अंतर्गत लोक अदालतों का गठन।
• लोक अदालतों में विवाद समाधान, बेहद सस्ता।
• साथ ही प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत पर आधारित

2.) ग्राम न्यायालय अधिनियम – इसके द्वारा ब्लॉक स्तर पर ग्राम न्यायालयों का गठन।
• सिविल व आपराधिक (अपवाद) मामलों की सुनवाई।

3.) वाणिज्यिक न्यायालय अधिनियम – इसका उद्देश्य आर्थिक वादों का त्वरित निपटान करना है।
• भारत में एक आर्थिक वाद निपटाने में 3 वर्ष से अधिक समय (आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19)

4.) अधिकरणों का गठन – विभिन्न अधिनियमों के अंतर्गत। उदाहरण :- राष्ट्रीय हरित अधिकरण।

* वैकल्पिक विवाद निपटान तंत्र (ADR) : समीक्षा

लाभ	मुद्दे
1.) सस्ता – ADR के अंतर्गत न्याय प्रक्रिया बेहद सस्ती।	1.) ADR द्वारा दिए गए निर्णयों पर पुनः अदालतों में याचिका दायर करने का अधिकार।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

(Don't write anything in this Area)

लाभ	मुद्दे
2.) सरल प्रक्रिया :- 'प्राकृतिक न्याय', तथा 'सिविल प्रक्रिया' का अनुपालन नहीं।	2.) निर्धनों के लिए यह प्रक्रिया भी थोड़ी जटिल।
3.) समाज सेवक, सिविल सेवकों को भी ADR तंत्र में सम्मिलित किया जाना।	3.) ADR के अंतर्गत निर्मित न्यायालयों में कर्मियों / न्यायाधीशों की कमी। उदाहरण :- ग्राम न्यायालय अधिनियम के अंतर्गत न्यायिक अधिकारियों की कम नियुक्ति

आगे का मार्ग :-

1.) योजनाएँ - प्रो बनो लीगल सर्विस, टेली लॉ की घोषणा, न्याय मित्र व विलंबित मामलों का निःशुल्क जिनका उद्देश्य निपटान है।

न्याय मानव समाज का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत, जिसे इस कथन से समझा जा सकता है - न्याय में विलंब, न्याय न देने के बराबर है।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

10. "Governors of State are found to be acting more as Agent of central government than representative of the State government". Comment in the context of reforms needed in the office of Governor.

(15 Marks, 250 Words)

संविधान के अनु. 153 के अंतर्गत राज्यों के लिए राज्यपाल का उपबंध करता है।

. हाल ही में विभिन्न राज्यों– मणिपुर, गोवा, कर्नाटक इत्यादि में राज्यपालों के ऊपर केंद्र के एजेंट के रूप में कार्य करने संबंधी आरोप, विपक्षी दलों द्वारा लगाए गए :-

(i) गोवा, मणिपुर में त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति में, सर्वाधिक सीट प्राप्त दल को सरकार गठन हेतु राज्यपाल द्वारा नहीं आमंत्रित करना। (2018)

(ii) जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल द्वारा राज्य विधानसभा का विघटन करना।

(iii) अनु. 356 का प्रयोग :- 2016 में अरुणाचल प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू करने का अनुमोदन राज्यपाल द्वारा, जिसे उच्चतम न्यायालय ने असंवैधानिक कहा।

इन कार्यों के कारण राज्यपालों पर राज्य सरकार के प्रतिनिधि की जगह, केंद्र के निर्देशों पर कार्य करने का आरोप लगता रहा है।

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

* राज्यपाल पद हेतु निम्नलिखित सुधारों की आवश्यकता है:-

1.) राज्यपाल की नियुक्ति – केंद्र द्वारा।
- राष्ट्रपति के द्वारा।

2.) राज्यपाल को हटाना – संविधान में इस संबंध में कोई प्रक्रिया / आधार नहीं।
– 'राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत' पद पर बना रहेगा।

3.) राज्यपाल को प्राप्त विभिन्न अधिकार
- अनु० 174 के अंतर्गत राज्य विधान सभा विघटित करने का।
- अनु० 201 के अंतर्गत राज्य विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति हेतु आरक्षित करना

* आगे का मार्ग
राज्यपाल पद में सुधारों हेतु निम्नलिखित सिफारिशों को अपनाया जा सकता है:-

1.) पुंछी आयोग –
(i) राज्यपाल की नियुक्ति में मुख्यमंत्री की सलाह, साथ ही बाहरी व्यक्ति (दूसरे राज्य) व राजनीतिक रूप से कम सक्रिय व्यक्ति की वरीयता।
(ii) 'राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत' शब्द को संशोधित करना तथा राज्यपाल का कार्यकाल 5 वर्ष के लिए करना।

Scanned by CamScanner

(iii) राज्यपाल को त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति में सरकार गठन में संवैधानिक रीतियों को अपनाना चाहिए।

Q) उच्चतम न्यायालय वाद

- बोम्मई वाद – अनु. 356 का प्रयोग आपवादिक स्थिति में करना चाहिए।
  – अनु. 356 संबंधी निर्णय, न्यायिक समीक्षा के अधीन है।
- रामेश्वर प्रसाद वाद – विधानसभा विघटन ('हॉर्स ट्रेडिंग' व 'अस्थाचार' के मिथ्या दावों पर नहीं किया जा सकता।

ऐसे में, राज्यपाल को पार्टी का नहीं, बल्कि राज्य की जनता के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना चाहिए।
– बी. आर. अंबेडकर (संविधान प्रारूप समिति अध्यक्ष)

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

35725_21020_1910034941_(2019-08-22 21:08:54)

Mentor Feedback Questions

1 .....

2 .....

3 .....

4 .....

5 .....

Test Goal

1 ..... ☐

2 ..... ☐

3 ..... ☐

Outcomes

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Scanned by CamScanner